अभूतपूर्व विकास की राह पर...

आज हम देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस को भारत की आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हम आजाद भारत के इस ऐतिहासिक कालखण्ड के साक्षी बन रहे हैं। देश के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने इसी वर्ष अमृत महोत्सव का शुभारम्भ किया। 75वें स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर आप सभी को बहुत-बहुत बधाई और ढेर सारी शुभकामनाएं। देश की आजादी, लम्बे संघर्ष और असंख्य बलिदानों का परिणाम है। मैं देश के स्वाधीनता संग्राम में प्राणों की आहुति देने वाली महान विभूतियों एवं देश की आन, बान और शान की खातिर सर्वस्व न्यौछावर करने वाले स्वाधीनता सेनानियों को आदरपूर्वक नमन करता हूं। आजादी के बाद भी, देश की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों तथा देश व प्रदेश के पुनर्निमाण में अमूल्य योगदान देने वाली महान विभूतियों के चरणों में मेरा प्रणाम। देश की आजादी की लड़ाई में हिमाचल प्रदेश के वीर सपूतों ने भी बढ़ चढ़ कर भाग लिया। आज़ादी की जंग में हिमाचल का योगदान स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। मैं आजादी के सभी पुरोधाओं तथा स्वतंत्रता सेनानियों को शत्-शत् नमन करता हूं। देवभूमि हिमाचल की पहचान वीरभूमि के रूप में भी है। आज़ादी हासिल करने से लेकर आजादी बरकरार रखने के लिए, जितने भी संघर्ष हुए, हिमाचल के वीर सपूतों ने हमेशा शौर्य की नई इबारत लिखी। यह गर्व की बात का है कि देश का पहला परमवीर चक्र हिमाचल के वीर सपूत मेजर सोमनाथ शर्मा को सर्वोच्च बलिदान के लिए प्राप्त हुआ था। इसके पश्चात् कर्नल डी.एस. थापा, कैप्टन विक्रम बतरा तथा राइफलमैन संजय कुमार को भी अतुलनीय शौर्य के लिए यह सर्वोच्च सम्मान प्राप्त हुआ। प्रदेश के वीर जवानों को मातृभूमि की रक्षा के लिए अदम्य साहस, शौर्य और वीरता का परिचय देने पर दो अशोक चक्र तथा एक हजार 96 वीरता पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। प्रदेश के जवानों को मिले बहादुरी के यह तगमे नई पीढ़ी को देश के लिए सर्वोच्च बलिदान की प्रेरणा देते रहेंगे। प्रदेश के नौजवानों के लिए सेना में भर्ती होना हिमाचल की गौरवपूर्ण परम्परा का हिस्सा रहा है। प्रदेश के सेवारत जवान सरहदों पर देश की रक्षा के लिए मुस्तैदी से डटे हैं और पूर्व सैनिक प्रदेश के विकास और नवनिर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। प्रदेश सरकार वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानियों, उनके आश्रितों, सेवारत सैनिकों, भूतपूर्व सैनिकों तथा उनके परिवारजनों के कल्याण के प्रति वचनबद्ध है। प्रदेश सरकार द्वारा उनके कल्याण के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं। वर्ष 1948 में अपने गठन से लेकर अब तक हिमाचल ने कई आयाम तय कर, देश के पहाड़ी राज्यों में आदर्श राज्य का गौरव हासिल किया है। कई क्षेत्रों में तो प्रदेश ने देश के बड़े राज्यों को भी नई राह दिखाई है। निःसन्देह इसका श्रेय प्रदेश की कर्मठ, ईमानदार और भोली-भाली जनता के दृढ़ संकल्प, इच्छाशक्ति और ईमानदार प्रयासों को जाता है। प्रदेश सरकार ने 27 दिसंबर, 2017 को कार्यभार सम्भाला। गत साढ़े तीन वर्षों में प्रदेश सरकार ने राज्य के चहुंमुखी विकास व लोक कल्याण के लिए कई योजनाएं शुरू की। हमारी सरकार ने जन आकांक्षाओं पर खरा उतरने, जनता व सरकार के बीच दूरी को खत्म करने, जवाबदेही और पारदर्शिता के साथ नीतियों और कार्यक्रमों को जनता तक पहुंचाकर विकास में जन-जन की भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास किया है। सत्ता सम्भालते ही प्रदेश सरकार ने वृद्धजनों को सम्मान देते हुए सामाजिक सुरक्षा पेंशन की आयु सीमा बिना किसी आय सीमा के 80 वर्ष से घटाकर 70 वर्ष की तथा इनकी पेंशन बढ़ाकर 1500 रुपये की गई। प्रदेश में कुल 6.09 लाख सामाजिक सुरक्षा पैंशन के लाभार्थी योजना का लाभ उठा रहे हैं। स्वर्ण जयन्ती नारी सम्बल योजना के तहत 65 वर्ष से 69 वर्ष तक की आयु की सभी पात्र वरिष्ठ महिलाओं को बिना आय सीमा के 1000 रुपए प्रतिमाह प्रदान किए जा रहे हैं। प्रदेश में शगुन योजना भी आरम्भ की गई है, जिसके तहत ग़रीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों की बेटियों को विवाह के समय 31000 रुपये का अनुदान दिया जा रहा है। 50 लाख से कम बुजुर्गों की आबादी वाले राज्यों की श्रेणी में हिमाचल प्रदेश ने बुजुर्गों की देखभाल में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। प्रदेश सरकार ने जनता से सीधा संवाद स्थापित करने तथा जन शिकायतों का तत्काल समाधान करने के लिए जनमंच शुरू किया, जिसे प्रदेश ही नहीं देश में भी सराहा जा रहा है। 1948 में प्रदेश के गठन के समय केवल 288 किलोमीटर वाहन योग्य सड़कें थी। वर्तमान में राज्य में लगभग 40,000 किलोमीटर वाहन योग्य सड़कें हैं। प्रदेश में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 2,700 करोड़ रुपये के 780 कार्य पूरे किए जा चुके हैं। कोरोना महामारी के बावजूद योजना के तहत वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान प्रदेश में 1915 किलोमीटर सड़कों तथा 7 पुलों का निर्माण किया गया। सीमित आर्थिक संसाधनों के बावजूद प्रदेश सरकार ने अपने संकल्प और केंद्र सरकार के सहयोग से विकास को तेज़ी से आगे बढ़ाया है। वर्ष 2020 से पूरी दुनिया कोविड-19 महामारी से जूझ रही है। कोविड की चुनौतियों के बावजूद प्रदेश सरकार ने लोगों के सहयोग से मूलभूत सुविधाओं को सुचारू रूप से संचालित कर प्रदेश की आर्थिकी को पुनः पटरी पर लाने की कोशिश की है। कोरोना पुनः अपने पांव पसार रहा है। कोरोना को फैलने से रोकने के लिए हमें टीकाकरण अभियान में तो शामिल होना ही है, साथ में प्रधानमंत्री मंत्री जी के 'दवाई भी-कड़ाई भी' के मूल मंत्र को भी अपनाना है और किसी भी प्रकार की कोताही नहीं बरतनी है। टीकाकरण के बाद भी कोविड अनुरूप व्यवहार अपनाना नितान्त आवश्यक है। हमें और भी सजग व सतर्क रह कर, एक जिम्मेवार नागरिक की भूमिका निभानी है। एक बार फिर मैं प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देता हूं तथा सबके स्वस्थ, सुखमय और समृद्ध जीवन की कामना करता हूं।

मालिक, प्रकाशक, प्रिंटर्ज एवं सम्पादक **लखबीर सिंह** ने **रोज़ाना विज़न** का यह अंक न्यू दशमेश प्रिंटर्ज 177-78, रनजीत नगर, जालन्धर पंजाब से छपवा कर मकान नंबर 69, प्रीत नगर सोडल रोड, जालन्धर-144004 (पंजाब) से प्रकाशित किया।

Editor Lakhbir Singh

Title Code PUNBIL01284

Responsible for selections of news and other matter as prb act all disputer will be filed under the jurisdictions of Distt. Jalandhar Courts

देश के प्रति अपने कर्तव्यों का भी ध्यान रखें

इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस की 75वीं वर्षगांठ को भारत सरकार 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तौर पर मना रही है। 15 अगस्त 1947 को भारत, ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र हुआ था। आजादी के 75 साल का ये जश्न 12 मार्च 2021 से शुरू हो चुका है जो 75 सप्ताह तक चलेगा। 15 अगस्त 2023, 78वें स्वतंत्रता दिवस पर अमृत महोत्सव का समापन होगा। इस दौरान भारत सरकार व राज्य सरकारों द्वारा देशवासियों की जनभागीदारी से अलग-अलग आयोजन किये जाएंगे। हजारों-हजारों सूर्यों से अधिक तेजस्वी भारत की स्वतंत्रता को लोक-जीवन में स्थापित किये जाने की आवश्यकता को महसूस करते हुए एक ओर आजादी के जश्न मनाये जायेंगे, जिसमें कुछ कर गुजरने की तमन्ना होगी तो अब तक कुछ न कर पाने की बेचैनी भी दिखाई देगी।

आजादी का अमृत महोत्सव भारत की विरल उपलब्धि है, हमारी जागती आंखों से देखे गये स्वप्नों को आकार देने का विश्वास है तो जीवन मूल्यों को सुरक्षित करने एवं नया भारत निर्मित करने की तीव्र तैयारी है। अब होने लगा है हमारी स्वतंत्र चेतना का अहसास। जिसमें आकार लेते वैयक्तिक, सामुदायिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक अर्थ की सुनहरी छटाएं हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बहुत कुछ बदला मगर चेहरा बदलकर भी दिल नहीं बदला। विदेशी सत्ता की बेड़ियां टूटीं पर बन्दीपन के संस्कार नहीं मिट पाये और राष्ट्रीयता प्रश्नचिन्ह बनकर आदर्शों की दीवारों पर टंग गयी थी, उसे अब आकार लेते हुए देखा जा रहा है। जिस संकीर्णता, स्वार्थ, राजनीतिक विसंगतियों, आर्थिक अपराधों, शोषण, भ्रष्टाचार एवं जटिल सरकारी प्रक्रियाओं ने अनंत संभावनाओं एवं आजादी के वास्तविक अर्थों को धुंधला दिया था, अब उन सब अवरोधक स्थितियों से बाहर निकलते हुए हम अपना रास्ता स्वयं खोजते हुए न केवल नये रास्तों बल्कि आत्मनिर्भर भारत, नये भारत एवं सशक्त भारत के रास्तों पर अग्रसर हैं। अब आया है उपलब्धि भरा वर्तमान हमारी पकड़ में। अब लिखी जा रही है कि भारत की जमीन पर आजादी की वास्तविक इबारत।

एक संकल्प लाखों संकल्पों का उजाला बांट सकता है यदि दृढ़-संकल्प लेने का साहसिक प्रयत्न कोई शुरू करे। अंधेरों, अवरोधों एवं अक्षमताओं से संघर्ष करने की एक सार्थक मुहिम हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में 12 मार्च 2021 को शुरू हुई थी। उनके दूसरे प्रधानमंत्री के कार्यकाल की सुखद एवं उपलब्धि भरी प्रतिध्वनियां सुनाई दे रही हैं। हमने मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के मन्दिर के शिलान्यास का दृश्य देखा। मोदी ने अपने दूसरे कार्यकाल में जता दिया है कि राजनीतिक इच्छाशक्ति वाली सरकार अपने फैसलों से कैसे देश की दशा-दिशा बदल सकती है, कैसे कोरोना जैसी महाव्याधि को परास्त करते हुए जनजीवन को सुरक्षित एवं स्वस्थ रख सकती है, कैसे महासंकट में भी अर्थव्यवस्था को ध्वस्त होने से बचा सकती है, कैसे राष्ट्र की सीमाओं को सुरक्षित रखते हुए पड़ोसी देशों को चेता सकती है।

संघर्षों से जूझने की क्षमता भारत को अपने स्वतंत्रता के उदयकाल से ही प्राप्त है। इसके सामने आज तक जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हुई हैं, अवरोध उपस्थित करने वाली शक्तियां उसके सामने टिकने का साहस नहीं कर पाईं। जिसको जन्मघूटी के साथ ही राष्ट्रीयता के संस्कार मिल जाये, वह कभी हार नहीं सकता, अपनी आजादी पर आने वाले हर खतरों एवं हमलों को परास्त करने की उसमें क्षमताएं हैं। आजाद भारत के निर्माताओं ने जिस सूझबूझ, कर्मठता, साहस के साथ परिस्थितियों से लोहा लिया, वह इतिहास का एक क्रांतिकारी पृष्ठ है। मोदी उसी पृष्ठ के एक चमकते राष्ट्रनायक हैं। स्वतंत्रता एवं सहअस्तित्व वाली मोदी की विदेश नीति इतनी स्पष्ट है कि आज दुनिया में भारत का परचम फहरा रही है। उनकी दृष्टि में कोरे हिन्दू की बात नहीं होती, ईसाई, मुसलमान, सिख की बात भी नहीं होती है, उनकी नजर में मुल्क की एकता सर्वोपरि है। उनके निर्णय उनके इतिहास, भूगोल, संस्कृति की पूर्ण जानकारी के आधार पर होते हैं।

हम महसूस कर रहे हैं कि निराशाओं के बीच आशाओं के दीप जलने लगे हैं, यह शुभ संकेत हैं। एक नई सभ्यता और एक नई संस्कृति करवट ले रही है। नये राजनीतिक मूल्यों, नये विचारों, नये इंसानी रिश्तों, नये सामाजिक संगठनों, नये रीति-रिवाजों और नयी जिंदगी की हवायें लिए हुए आजाद मुल्क की एक ऐसी गाथा लिखी जा रही है, जिसमें राष्ट्रीय चरित्र बनने लगा है, राष्ट्र सशक्त होने लगा है, न केवल भीतरी परिवेश में बल्कि दुनिया की नजरों में भारत अपनी एक स्वतंत्र हस्ती और पहचान लेकर उपस्थित है। चीन की दादागिरी और पाकिस्तान की दकियानूसी हरकतों को मुंहतोड़ जवाब पहली बार मिला है। किसी भी राष्ट्र की ऊंचाई वहां की इमारतों की ऊंचाई से नहीं मापी जाती बल्कि वहां के राष्ट्रनायक के चरित्र से मापी जाती है। उनके काम करने के तरीके से मापी जाती है। आजादी के 75वें वर्ष में पहुंचते हुए हम अब वास्तविक आजादी का स्वाद चखने लगे हैं, आतंकवाद, जातिवाद, क्षेत्रीयवाद, अलगाववाद की कालिमा धुल गयी है, धर्म, भाषा, वर्ग, वर्ण और दलीय स्वार्थों के राजनीतिक विवादों पर भी नियंत्रण हो रहा है। इन नवनिर्माण के पदचिन्हों को स्थापित करते हुए कभी हम प्रधानमंत्री के मुख से कोरोना महामारी जैसे संकटों को मात देने की बात सुनते हैं तो कभी गांधी जयन्ती के अवसर पर स्वयं झाड़ू लेकर स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करते हुए मोदी को देखते हैं। मोदी कभी विदेश की धरती पर हिन्दी में भाषण देकर राष्ट्रभाषा को गौरवान्वित करते हैं तो कभी 'मेक इन इंडिया' का शंखनाद कर देश को न केवल शक्तिशाली बल्कि आत्म-निर्भर बनाने की ओर अग्रसर करते हैं। नई खोजों, दक्षता, कौशल विकास, बौद्धिक संपदा की रक्षा, रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी उत्पादन, श्रेष्ठ का निर्माण-ये और ऐसे अनेकों सपनों को आकार देकर सचमुच मोदीजी हमारी स्वतंत्रता को सुदीर्घ काल के बाद सार्थक अर्थ दे रहे हैं।

आजादी का यह उत्सव उन लोगों के लिए एक आह्वान है जो अकर्मण्य, आलसी, निठल्ले, हताश, सत्वहीन बनकर सिर्फ सफलता की ऊंचाइयों के सपने देखते हैं पर अपनी दुर्बलताओं को मिटाकर नयी जीवनशैली की शुरुआत का संकल्प नहीं स्वीकारते। इसीलिए आजादी के अमृत महोत्सव का यह जश्न एक संदेश है कि-हम जीवन से कभी पलायन न करें, जीवन को परिवर्तन दें, क्योंकि पलायन में मनुष्य के दामन पर बुजदिली का धब्बा लगता है जबकि परिवर्तन में विकास की संभावनाएं सही दिशा और दर्शन खोज लेती हैं। आजादी का दर्शन कहता है- जो आदमी आत्मविश्वास एवं अभय से जुड़ता है वह अकेले ही अनूठे कीर्तिमान स्थापित करने का साहस करता है। समय से पहले समय के साथ जीने की तैयारी का दूसरा नाम है स्वतंत्रता का बोध। दुनिया का कोई सिकंदर नहीं होता, वक्त सिकंदर होता है इसलिए जरूरी है कि हम वक्त के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना सीखें। हमें राष्ट्रीय जीवन में नैतिकता एवं आत्मनिर्भरता को स्थापित करने के लिए समस्या के मूल को पकड़ना होगा। हम पत्तों और फूलों के सींचन पर ज्यादा विश्वास करते हैं, जड़के अभिसिंचन की ओर कम ध्यान देते हैं इसलिए पत्र और पुष्प मुरझा जाते हैं। इसलिये हम आत्मनिर्भर नहीं हो पाए। नरेन्द्र मोदी समस्याओं के मूल को पकड़ने के लिये जद्दोजहद कर रहे हैं। वे पत्तों और फूलों को सींचने की बजाय जड़ को सींच रहे हैं ताकि आने वाली पीढ़ियां समस्यामुक्त जीवन जी सकें। आजादी के अमृत महोत्सव का उत्सव मनाते हुए यही कामना है कि पुरुषार्थ के हाथों भाग्य बदलने का गहरा आत्मविश्वास सुरक्षा पाये। एक के लिए सब, सबके लिए एक की विकास गंगा प्रवहमान हो। आजादी का सही अर्थ है स्वयं की पहचान, सुप्त शक्तियों का जागरण, आत्मनिर्भरता एवं वर्तमान क्षण में पुरुषार्थी जीवन जीने का अभ्यास।

आज़ादी के लिए पंजाब का मूल्यवान योगदान

दुनिया की अग्रणी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरे भारत के लिए मैं खास कर पंजाब और चंडीगढ़ को दिल से बधाई देता हूं। आज, हम उन सभी बलिदानों, समर्पित नेताओं और देशभगतों को दिल से श्रद्धांजलि देते हैं जिन्होंने अपनी सारी ज़िंदगी आज़ादी के लिए संघर्ष किया। हम अपनी सेना के बहादुरों को भी श्रद्धांजलि देते हैं जिन्होंने देश की अखंडता और सरहदों की रक्षा करते हुये अपनी जानें न्यौछावर कर दीं। देश की आज़ादी के लिए पंजाब का मूल्यवान योगदान दुनिया के इतिहास में अतुल्नीय है। महान योद्धा शहीद भगत सिंह, लाला लाजपत राय, शहीद ऊधम सिंह, करतार सिंह सराभा, दीवान सिंह कालेपानी और अन्य बहुत जिन्होंने अपने खून की हर बूंद देश के लिए बहायी और जेलों में बंद रहे, हम सभी के लिए एक समृद्ध विरासत छोड़ गए हैं, जो अपनी मातृ भूमि के लिए प्यार और सम्मान की मांग करते हैं। इसके अलावा भारत की शान और आज़ादी को सुरक्षित रखने की दृढ़ वचनबद्धता की भी मांग करती है। पंजाब और यहां के लोगों के सराहनीय योगदान को याद करना बहुत गर्व वाली बात है, जिन्होंने आज़ादी लेने के लिए बहादुरी और दृढ़ता के जौहर दिखाए। हमारे राज्य और क्षेत्र के विकास के लिए इस क्षेत्र में शान्ति और सदभावना बहुत जरुरी है। पंजाब और चंडीगढ़ के बहादुर और मेहनती लोग अपनी प्यार-भावना, मानवता और उदारता के लिए जाने जाते हैं। यह हमारे महान गुरूओं के उपदेश और दिखाए गये रास्ते के अनुसार शांति, भाईचारे और एकता बनाये रखने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। पंजाब सरकार ने मलेरकोटला को राज्य का एक और ज़िला घोषित किया है। 23वां ज़िला बहुत बड़ी ऐतिहासिक महत्ता रखता है। ज़िला प्रशासनिक कंपलैक्स के लिए उचित जगह जल्द ही स्थापित की जा रही है। इसी तरह चंडीगढ़ प्रशासन भी भयानक कोरोना वायरस से बड़ी जंग लड़ रहा है और स्थिति से निपटने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। भारत सरकार के गृह और स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार चंडीगढ़ और इसके आसपास की स्थितियों का जायज़ा लेने के लिए वीडियो कान्फ्रेंसों के द्वारा नियमित समीक्षा बैठकें की जा रही हैं। चंडीगढ़ की तीनों ही मैडीकल संस्थाएं प्रशासन के साथ पूरे तालमेल से काम कर रही हैं और उनको निर्देश दिया गया है कि वह सह-रोगों वाले मरीज़ों की विशेष देखभाल करें और यह यकीनी बनाएं कि मौतों की संख्या घटाई जाये। महामारी के इतने कठिन समय के दौरान चंडीगढ़ में सभी के लिए भोजन यकीनी बनाने के लिए मैं गैर-सरकारी संगठनों, वी.ओज़, राजनैतिक और धार्मिक संस्थाओं का धन्यवाद करता हूं।